“हमारे प्रभु के नाम की स्तुति हो।”
जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं, तो यह याद रखें कि पवित्रशास्त्र केवल सत्य ही नहीं, बल्कि हमारी आत्मा का भोजन भी है। जैसा लिखा है, “मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा” (मत्ती 4:4)। कमजोरी, अनिश्चितता या आत्मिक सूखे के समय में, यही वचन हमें फिर से जीवित करता है, सुधारता है और पुनःस्थापित करता है।

कभी-कभी मन में यह प्रश्न उठता है: यीशु—जो परमेश्वर के सिद्ध पुत्र हैं—अपने पिता से प्रार्थना करते समय इतनी गहरी पीड़ा और आँसुओं के साथ क्यों रोए? आखिर यीशु निष्पाप थे (इब्रानियों 4:15), निडर थे और परमेश्वर के साथ पूर्ण एकता में थे। उनके पास दिव्य अधिकार था, और जो कुछ वे पिता से माँगते थे, वह सदैव परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होता था। फिर ऐसे पवित्र और सामर्थी प्रभु को रोने की क्या आवश्यकता थी?

इसका उत्तर मसीह की मानवता, उनके हृदय और उनके मिशन की एक गहरी सच्चाई को प्रकट करता है।

यीशु इसलिए रोए क्योंकि वे गहराई से महसूस करते थे—और गहराई से प्रेम करते थे

इब्रानियों 5:7 में हम पढ़ते हैं:

“वह अपने देह के दिनों में ऊँचे शब्द से पुकार पुकार कर और आँसू बहा बहा कर उससे जो उसे मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएँ और विनती करता रहा, और भक्तिपूर्ण भय के कारण उसकी सुनी गई।” (इब्रानियों 5:7)

यहाँ लेखक यीशु की दिव्यता के साथ-साथ उनकी पूर्ण मानवता को भी दिखाता है। अपनी मानवता में यीशु ने गहरा दुःख, भय और शोक अनुभव किया—विशेषकर जब वे क्रूस की ओर बढ़ रहे थे। उनके आँसू कमजोरी का चिन्ह नहीं थे, बल्कि पूर्ण समर्पण और करुणा का प्रमाण थे। उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के आगे स्वयं को पूरी तरह सौंप दिया, चाहे उसका अर्थ दुःख और मृत्यु ही क्यों न हो (लूका 22:42–44)।

हालाँकि यीशु के पास सम्पूर्ण अधिकार था (मत्ती 28:18), फिर भी उनके आँसू यह सिखाते हैं कि सच्ची आत्मिक सामर्थ नम्रता, आज्ञाकारिता और करुणा में प्रकट होती है। गतसमनी में उनकी पीड़ा इतनी तीव्र थी कि “उनका पसीना मानो लहू की बड़ी बड़ी बूँदों के समान भूमि पर गिर रहा था” (लूका 22:44)।

यीशु ने हमारे मानवीय अनुभव को साझा किया

यीशु केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी रोए। जब वे लाज़र की कब्र के पास पहुँचे और शोक मनाते लोगों का दुःख देखा,

तो पवित्रशास्त्र का सबसे छोटा, परन्तु अत्यंत शक्तिशाली पद कहता है:

“यीशु रोया।” (यूहन्ना 11:35)

यह कोई सतही दुःख नहीं था। यद्यपि यीशु जानते थे कि वे लाज़र को जीवित करेंगे, फिर भी दूसरों के दुःख ने उनके हृदय को छू लिया। उनके आँसू यह दिखाते हैं कि वे मानव पीड़ा से गहराई से जुड़े हुए हैं—वे “दुःखों का पुरुष और रोग से परिचित” हैं (यशायाह 53:3)।

प्रेरितों ने भी इसी करुणा की आत्मा को आगे बढ़ाया

यह करुणा केवल यीशु तक सीमित नहीं रही। प्रेरित पौलुस, जो मसीह की आत्मा से भरे हुए थे, उन्होंने भी गहरी संवेदनशीलता और प्रेम दिखाया। प्रेरितों के काम 20:31 में पौलुस कहता है:

“इसलिए जागते रहो, और स्मरण रखो कि मैं तीन वर्ष तक रात-दिन आँसू बहा बहा कर हर एक को चिताता रहा।”

फिर 2 कुरिन्थियों 2:4 में वह लिखता है:

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

“मैं ने तुम्हें बहुत दुःख और मन की पीड़ा के साथ और बहुत से आँसू बहा कर लिखा, इस लिए नहीं कि तुम्हें दुःखी करूँ, पर इसलिए कि तुम उस अत्यधिक प्रेम को जानो जो मुझे तुम से है।”

और फिलिप्पियों 3:18 में:

“क्योंकि बहुत से लोग ऐसे चलते हैं, जिनकी चर्चा मैं तुम से बार बार करता था, और अब भी रो रो कर करता हूँ, कि वे मसीह के क्रूस के बैरी हैं।”

पौलुस को अपने आँसुओं पर लज्जा नहीं थी। उसके आँसू उसके अनुग्रह की समझ, उद्धार की कीमत और मसीह के बिना मनुष्य की खोई हुई दशा को दर्शाते थे। उसके आँसू उसके सच्चे प्रेम और बुलाहट का हिस्सा थे।

हमें भी परमेश्वर की भलाई से प्रभावित होना चाहिए

कुछ लोग कहते हैं, “मैं आसानी से नहीं रोता।” यह हो सकता है। परन्तु आत्मिक जीवन में आँसू अक्सर जागृति, गहरे मन-फिराव और कृतज्ञता का चिन्ह होते हैं। यदि आप समय निकालकर इस पर मनन करें कि परमेश्वर ने आपके लिए क्या किया है—कैसे उसने आपको सम्भाला, क्षमा किया, आपकी कमियों के बावजूद आपको चुना—तो आपके हृदय में

भी वही कोमलता उत्पन्न हो सकती है।

ज़रा सोचिए:

जब बहुत से लोग बीमारी, दुर्घटना या हिंसा में मर गए, तब आप आज भी जीवित क्यों हैं?
क्या आपने कभी उस हवा की कीमत चुकाई है जिसे आप साँस में लेते हैं, या उस स्वास्थ्य की जिसे आप पाते हैं?
क्या आपने उद्धार कमाया? नहीं। इफिसियों 2:8–9 हमें स्मरण दिलाता है:
“क्योंकि अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार विश्वास के द्वारा हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है; और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।”

आप अनुग्रह से चुने गए हैं, न कि इसलिए कि आप दूसरों से अधिक बुद्धिमान या अच्छे थे। यदि परमेश्वर ने आपको अपनी ओर न खींचा होता (यूहन्ना 6:44), तो आप आज भी खोए हुए होते। जब हम उसकी दया, धीरज और सुरक्षा पर मनन करते हैं, तो सबसे कठोर हृदय भी पिघल सकता है।

कृतज्ञता हमें स्तुति और आँसुओं की ओर ले जानी चाहिए

जब यह वर्ष समाप्त हो रहा है, तो परमेश्वर की भलाई पर मनन करें। हो सकता है आप किसी बड़ी विपत्ति से बच गए हों। हो सकता है आपने कमजोरी या विद्रोह के क्षण देखे हों, फिर भी परमेश्वर विश्वासयोग्य बना रहा। हो सकता है किसी वैश्विक महामारी के समय

आप सुरक्षित रखे गए हों, जब बहुत से लोग चले गए। यह सब अनुग्रह ही है।

अपने हृदय को कठोर न करें। अपने भावों को परमेश्वर के प्रति प्रतिक्रिया करने दें। आराधना करें, यदि आवश्यक हो तो रोएँ, और पूरे मन से धन्यवाद दें।

जैसा कि लिखा है:

“यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।”
(1 इतिहास 16:34)

एक प्रार्थना

परमेश्वर हमें वह संवेदनशीलता दे कि हम अपने जीवन में उसके हाथ को काम करते हुए देख सकें। वह न केवल हमारे शरीर और मन को, बल्कि हमारी आँखों को भी चंगा करे—हमारी आत्मिक दृष्टि को—ताकि हम उसकी उपस्थिति, उसकी दया और उसकी सामर्थ को पहचान सकें। और हम केवल शब्दों से ही नहीं, बल्कि पूरे हृदय से उसकी आराधना करें।

शलोम

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp